विनोबा कथावली

■ वर्ष : प्रथम ■ अंक : ३ ■ अक्टूबर २०२४

अशिक्षा के पार!

कलमना (नागपुर): केवल 2 छात्र? इससे स्कूल कैसे चलेगा? श्रीमती मीरा ज्ञानोबा मुसळे जिस शिक्षिका से यह पूछ रही थीं वह भी स्तब्ध थी। पवनी की इस जिला परिषद शाला में वह भी अभी-अभी दाखिल हुई थी।

पर मीरा जी कोई कच्ची खिलाड़ी नहीं थीं। वे 15 साल से इस जिले के सालईरानी और कलमना स्कूलों में शिक्षिका रह चुकी थीं। इस परिस्थिति पर उनका नुस्खा बिलकुल अनोखा था। अपनी सहेली के अंग्रेजी स्कूल में पढ़ने वाले बेटे को वह रोज़ अपने साथ अपने स्कूल में लेकर आने लगीं।

उसे वहां जाते देखकर, अंग्रेजी स्कूल में जाने वाले गांव के बाकी बच्चे भी जिला परिषद स्कूल में प्रवेश लेने लगे। फिर मीरा जी ने अपनी डेढ़ दशक के अनुभव से पाया शिक्षा का हुनर दिखाना शुरू किया। ऊनके उपक्रमों में शामिल होते होते बच्चों को स्कूल से लगाव हो गया।

अब स्कूल में छात्र 2 से 12 हो चुके थे। पर मीरा जी संतुष्ट नहीं थीं। वे स्कूल में सारी आधुनिक सुविधाएं लाने में लगी हुई थीं। अभिभावक भी स्कूल के लिए कुछ करना चाहते थे। सरकार की कई योजनाएं भी थीं। इन सबका लाभ उठाकर उन्होंने बड़ी मेहनत और लगन से ग्राउंड, वॉल कंपाउंड, रसोई उद्यान, साफ-सुथरे शौचालय, सोलर पैनल, स्मार्ट टीवी, कंप्यूटर, डिजिटल पेंटिंग, आदि उपलब्ध करवाया।

मीरा जी बताती हैं कि जब वे पहली बार शिक्षिका के पद पर नियुक्त हुईं, तब उनका बच्चा केवल ढाई महीने का था। "उसे साथ में स्कूल लेकर जाने के सिवाय मेरे पास कोई रास्ता नहीं था। उस समय स्कूल में माहौल प्रतिकूल था। वरिष्ठ कर्मचारियों से काफी अपमान सहना पड़ता था।" पर वे डगमगाने की बजाय यह सोचकर काम करती रहीं कि अगली पीढ़ी की बच्चियों को ऐसे अपमान और

कष्ट न झेलने पड़ें। यही विचार उन्हें ऊर्जा देता रहा।

जुलाई 2024 में मीरा जी की कलमना की शाला में दोबारा नियुक्ति हुई, जहां उन्होंने ऍक्टिविटी बेस्ड लर्निंग से बच्चों के साथ गांववालों को भी शामिल कर लिया, जिससे उनके मन में स्कूल के लिए प्रेम बढ़ गया है। छात्रों की संख्या भी बढ़ रही है। वे कहती हैं, पवनी स्कूल की तरह कलमना स्कूल को भी डिजिटल बनाने का मेरा सपना है।"

इस दिशा में वे कार्य भी शुरू कर चुकी है। उनके स्कूल को मिला महाराष्ट्र सरकार का 'मुख्यमंत्री माझी शाळा, सुंदर शाळा' का प्रथम पुरस्कार इस बात का प्रमाण है।

मीरा जी कहती हैं कि विनोबा ऐप के माध्यम से मिले जिला स्तरीय और तहसील स्तरीय 'पोस्ट ऑफ द मंथ' पुरस्कारों से बहुत प्रोत्साहन मिलता है। उन्हें

कलमना गांव के स्कूल में जाने के लिए नांद नदी को पार करना पड़ता है। अतिवृष्टि के कारण नदी में कई बार बाढ़ आ जाती है। कई बार तो बाढ़ की वजह से मीरा जी घर भी नहीं जा पाती। पर वे अपना अध्यापन का कार्य जारी रखती हैं। उन्हें देखकर फिर छात्र भी स्कूल आकर अपना अध्ययन करते हैं।

बेहद खुशी मिलती है, जब वे पढ़ाई या अन्य गतिविधियों में अच्छा प्रदर्शन करने वाले बच्चों में विनोबा के गिफ्ट्स बांटती हैं, ताकि दूसरे बच्चे भी स्पर्धा करना सीखें।

शेष पृष्ठ २ पर...

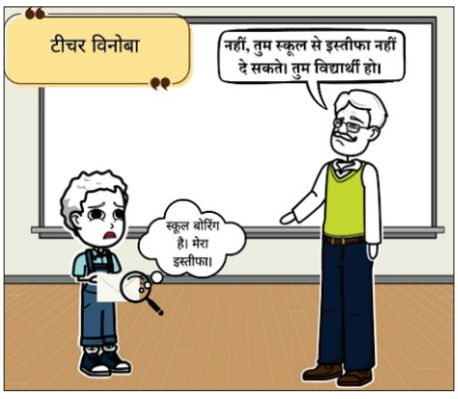

शिक्षा का नया प्रभावी इकोसिस्टम – विनोबा

धाराशिव: ग्रामीण शिक्षा में उत्कृष्ट कार्य करने का धाराशिव जिले का इतिहास रहा है। धाराशिव गज़ट में दर्ज जानकारी के अनुसार, 1972 में धाराशिव उन जिलों में से रहा है जिनकी ग्रामीण शिक्षा प्रणाली पूरे मराठवाड़ा और महाराष्ट्र में सबसे मजबूत और सफल रही है। इस प्रणाली को पुनर्जीवित करने, उसे टिकाऊ और सक्षम बनाने के लिए, तीन मुद्दों को हमने केंद्र में रखा:

१. छात्रों की पढ़ने में रुचि विकसित हो इसलिए स्कूलों में पुस्तकालयों का एक संजाल (नेटवर्क) हो।
२. छात्रों को प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए तैयार किया जाए।
३. शिक्षकों को प्रशिक्षित कर 'मास्टर ट्रेनर्स' का निर्माण किया जाए।

हमें पूरा पाठन-तंत्र (इकोसिस्टम) तैयार करना था। तो पहले मॉडल स्कूलों का निर्माण कर उनमें हमने पुस्तकालय स्थापित किए। उनके प्रबंधन के लिए छात्रों को ही नियुक्त किया और नियमित रूप से निर्धारित संख्या में शब्द/ पृष्ठ पढ़ने का लक्ष्य दिया।

धाराशिव में 700 से अधिक गाँव और 1,100 से अधिक ज़िला परिषद शालाएँ हैं, जो 7,500 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैले हुए हैं। इसलिए इस प्रक्रिया को टेक्नॉलजी के माध्यम से ही मॉनिटर किया जा सकता था। तय हुआ कि शिक्षकों को समर्पित विनोबा ऐप का उपयोग किया जाए, जो ओपन लिंक्स फाउंडेशन (OLF) ने पहले ही

राहुल गुप्ता
पूर्व CEO, जिला परिषद, धाराशिव (फरवरी 2024 तक)
जॉईन्ट MD, महाडिसकॉम, छत्रपति संभाजीनगर

विकसित किया था। विनोबा शिक्षकों को सोशल प्लेटफॉर्म पर जोड़ने और उनकी कार्यक्षमता में सुधार करने में मदद करता है।

महाराष्ट्र सरकार द्वारा कक्षा 5 और 8 के लिए आयोजित की जाने वाली छात्रवृत्ति परीक्षाओं की तैयारी जवाहर नवोदय विद्यालय (JNV) और सैनिक स्कूल की प्रवेश परीक्षाओं की तैयारी में भी सहायक होती है। हालांकि, प्रश्न-पत्र बनाने के प्रति सभी शिक्षक उतने उत्सुक नहीं होते, क्यूंकि 150 सवालों वाली उत्तर-पुस्तिकाओं की जांच करना बहुत समय-साध्य होता है। इन अंकों को एकत्रित और संकलित करना और भी कठिन कार्य है।

छात्रों को परीक्षाओं के लिए तैयार करने के लिए टेक्नॉलजी पर आधारित एक पारिस्थितिकी तंत्र (इकोसिस्टम) स्थापित किया गया। सबसे पहले, अंग्रेजी, मराठी और गणित के प्रश्न बैंक तैयार किये गए। छात्रों को असली परीक्षा जैसा अनुभव मिले, इसलिए लिए OMR आधारित परीक्षा प्रणाली बनाई गई। रेमीडियल क्लासेस आयोजित की गईं जहाँ छात्रों को अपनी गलतियां समझकर उन्हें सुधारने में मदद हुई। छात्र, अभिभावकों और शिक्षकों के लिए परिणामों को विनोबा भावे ऐप पर साझा किया गया।

OMR तकनीक कई वर्षों से बहुत उपयुक्त सिद्ध हुई है। इसका उपयोग राष्ट्रीय स्तर की परीक्षाओं के लिए होता है। यहाँ पर हम इसे स्थानीय संदर्भ में सफलतापूर्वक लागू कर पाए। शिक्षकों का पेपर जांचने और परिणाम संकलन का समय भी बच गया। विनोबा टीम ने बताया कि इस पद्धति को एक वर्ष के भीतर 14 से अधिक जिलों में तेज़ी से अपनाया गया है।

ज़िला परिषद के स्कूलों के छात्रों को मराठी और अंग्रेजी भाषाओं के परीक्षा संबंधी प्रश्नों में विशेष कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा था। इसलिए, छात्रों और शिक्षकों के लिए विनोबा टीम द्वारा एक क्रैश कोर्स तैयार किया गया। इसे विनोबा प्लेटफॉर्म का उपयोग करके लागू और मॉनिटर किया गया। परिणाम अच्छे मिले।

पिछले सत्र में कक्षा 5वी के 988 विद्यार्थी छात्रवृत्ति के लिए पात्र हुए, जिनमें से 138 को छात्रवृत्ति प्राप्त हुई। कक्षा 8वी के 79 विद्यार्थी छात्रवृत्ति के लिए पात्र हुए, जिनमें से 50 को छात्रवृत्ति प्राप्त हुई। कई बच्चों को सैनिक स्कूलों आदि में प्रवेश पाने में मदद हुई है। ■

(पृष्ठ १ से..)

अशिक्षा के पार!

उनके उपक्रमों का लाभ बाकी शिक्षकों और उनके छात्रों को हो, इसलिए अब वे 'मीरा मुसळे' नाम से यूट्यूब चैनल चलाती हैं, जिसपर 916 वीडियो हैं, और 1,555 सब्सक्राइबर्स हैं।

"आज मेरे पांच विद्यार्थी एमबीबीएस, और कई अन्य विद्यार्थी इंजीनियर, पुलिस, बीडीएस डॉक्टर, इत्यादि बन गए हैं, इस बात का गर्व होता है। क्योंकि इन छात्रों को मैंने अपने बच्चों की तरह शिक्षित किया है," वे कहती हैं। पर विनम्र भाव से यह भी बताना नहीं भूलतीं, "मेरे पति श्री नामदेव नागरगोजे और मेरे अपने बच्चों के सतत सहयोग के बिना यह काम संभव नहीं था। उसी तरह, गांववालों का, खास कर सरपंच सचिन भाऊ भाकरे जी, का भी इसमें बहुत बड़ा योगदान रहा।"

मीरा जी ने लगभग शून्य से शुरुआत की। बच्चों को स्कूल में लाकर उनमें शिक्षा के प्रति प्रेम तो जगाया ही, साथ-साथ उनके छात्र जिला और राज्य स्तरीय स्पर्धाओं में भाग लें और अव्वल आएं इसलिए खूब मेहनत की।

शिक्षा की योजना छात्रों के सर्वांगीण विकास से प्रेरित हो, ऐसी तड़प मन में लेकर, हर कठिनाई को चीरती हुई, 21 साल से निरंतर शिक्षा दान का पवित्र कार्य करती ये शिक्षिका, श्रीमती मीरा ज्ञानोबा मुसळे, विनोबा टीम के लिए आशा का एक अहम स्रोत हैं। ■

जलगांव : कलेक्टर श्री आयुष प्रसाद की पहल और मार्गदर्शन में जिले के उत्कृष्ट कार्य करने वाले शिक्षकों का सम्मान समारोह आयोजित किया गया। इस समारोह में महाराष्ट्र के राज्यपाल श्री सी. पी. राधाकृष्णन के हाथों उत्कृष्ट शैक्षिक उपक्रम और क्रियाएं संचालित करनेवाले शिक्षकों को विनोबा ऐप के माध्यम से प्रमाणपत्र, आचार्य विनोबा भावे डायरी और शिक्षा सामग्री प्रदान किए गए। इस पुरस्कार वितरण का उद्देश्य जिले के नवाचारी शैक्षिक उपक्रमों को शिक्षक समुदाय तक पहुंचाना और इससे प्रेरणा लेकर नए-नए उपक्रमों को कार्यान्वित करने के लिए प्रोत्साहित करना है।

दुर्ग: यहाँ आयोजित जिलास्तरीय कार्यक्रम में उत्कृष्ट कार्य करने वाले 10 शिक्षकों और 15 शीर्ष विद्यालयों का सम्मान किया गया! विधायक श्री गजेंद्र यादव, ललित चंद्राकर, और श्री एम. भार्गव (आई. ए. एस.), की उपस्थिति में दुर्ग के शैक्षणिक नायकों का सम्मान किया गया।

जांजगिर-चांपा: हाल ही के कार्यक्रम में सहायक कलेक्टर दुर्गा प्रसाद अधिकारी और डीएमसी राजकुमार तिवारी द्वारा शिक्षकों, खुशबू कश्यप और घनश्याम दिनकर, को 'मुख्यमंत्री शिक्षा गौरव अलंकार' पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

पुणे: ओपन लिंक्स फाउंडेशन के संस्थापक श्री संजय डालमिया ने हाल ही में पुणे कार्यालय में DIET प्राचार्य से मुलाकात की और उन्हें "विनोबा कथावली" की प्रतियां और FLN OMR शीट्स के नमूने प्रस्तुत किए। इस अवसर पर शिक्षकों द्वारा डेटा संग्रहण में आने वाली चुनौतियों और TAG कार्यक्रम पर विस्तार से चर्चा की गई।

चंद्रपुर: जिले के भद्रावती तहसील में धोरवासा क्लस्टर के 38 शिक्षकों का प्रशिक्षण विनोबा टीम द्वारा आयोजित किया गया। इनमें 11 मुख्याध्यापक भी शामिल थे। कार्यक्रम प्रबंधक विशाल डहाट ने विनोबा ऐप की अनेक नई विशेषताओं के बारे मे समझाया, और साथ ही विनोबा कार्यक्रम के विजन और मिशन को प्रतिभागियों के साथ साझा किया।

नागपूर: कामठी के महालगांव जिला परिषद उच्च प्राथमिक शाला में शिक्षण में नवीनता लाने और शिक्षकों का काम सरल बनाने के उद्देश्य से जिला समन्वयक अतुल भगत के मार्गदर्शन में विनोबा ऐप की कार्यशाला संपन्न हुई। इस मौके पर महालगांव केंद्र प्रमुख राजेंद्र डोरलीकर, मुख्याध्यापक रमेश सोनवणे, वनिता शिंगारे, वसंत गोमासे, मंगला शाहू, सुष्मा गहलोत, दशरथ मोरे, सुरेखा यादव, ममता तिजारे, सुचिता बेतवार समेत कुल 45 शिक्षक उपस्थित थे।

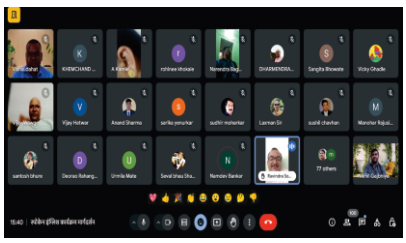

भंडारा: 9 सितंबर को, विनोबा कार्यक्रम के अंतर्गत जिले के 75 स्कूलों के 95 शिक्षकों के लिए एक ऑनलाइन स्पोकन इंग्लिश प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। यह प्रशिक्षण शिक्षा अधिकारी रविंद्र सोनटक्के और उप शिक्षा अधिकारी मंगला गोतरणे के मार्गदर्शन में हुआ। सत्र में 100 से ज़्यादा प्रतिभागी थे, जिनमें विनोबा टीम भी शामिल थी।

संदीप पाटिल
भद्रावती, चंद्रपुर

शिक्षक का संदेश

"केवल अक्षर ज्ञान से व्यक्ति सुसंस्कृत नहीं होता..."
(पूरा संदेश ऐप पर देखें)

शिक्षा का अभियान

कोरोना के संकट में भी इन दो शिक्षकों ने संख्या बल कायम रखने के लिए बड़ी मेहनत की। वे छात्रों के घर पढ़ाई का साहित्य दे आते, और बीच बीच में जा कर उनकी प्रगति देखते।

सावरी (भंडारा): वर्ष 2018। जिला परिषद शाला, सावरी। गांव के लोगों ने मान लिया था कि यह पाठशाला बंद होने वाली है। निजी शालाओं ने सारे अभिभावकों को अलग अलग प्रलोभनों से आकर्षित कर लिया था।

श्रीमती मोना सार्वे और श्री संजय शेलके (शेळके) एक ही पाठशाला में शिक्षक के रूप में नियुक्त हुए थे। जब वे सावरी शाला पहुंचे, तब बचे हुए दो छात्र भी टीसी लेने आए थे।

दोनों ने बिना हार माने, घर घर जा कर अपनी पहले की शालाओं में किए काम के वीडियोज अभिभावकों को दिखाए; समझाया कि सावरी की इस शाला में भी ये हो सकता है। "हमने उन्हें बताया कि सरकार की ओर से छात्रों को मुफ्त शिक्षा मिलती है; जबकि निजी शालाओं में इन्हीं चीज़ों के लिए बहुत खर्च होता है, जो अनावश्यक है," मोना जी बताती हैं।

उनकी मेहनत रंग लाई। सात विद्यार्थी आए।

उसके बाद मोना जी और संजय जी ने अपने अध्यापन के अनुभव का पिटारा खोला। बच्चों की पढ़ाई में रुचि बढ़ाने के लिए खेल खेल में उन्हें कितना कुछ पढ़ा दिया।

उनके उपक्रम बच्चों के लिए आसान भी थे और रोचक और प्रभावी भी। जैसे गणित में गति बढ़ाने के लिए 'सेम डेट सेम टेबल', और व्यक्तित्व विकास के लिए आशु भाषण और सामान्य ज्ञान। उनका एक विशेष उपक्रम था 'चावड़ी वाचन'। जिसमें गांव के चौक पर बैठकर छात्र जोर से किताबें पढ़ते हैं। वहां के उपक्रम देखकर धीरे धीरे बच्चों की संख्या बढ़ने लगी।

अब सावरी शाला में 35 के करीब छात्र हैं। मोना जी को इस कार्य के लिए जिले का 'आदर्श शिक्षक पुरस्कार' भी मिला। सावरी वार्ड से जिला परिषद सदस्य श्री प्रेमभाऊ वनवे जी ने भी उनकी सराहना की। मोना जी कहती हैं कि उनके कार्य में उन्हें केंद्र प्रमुख और सावरी के सरपंच से बहुत सहायता मिली।

मोना जी कहानी का मार्मिक समापन करती हैं, ये कहके: "शिक्षा और शाला से बच्चों का प्रेम बढ़े, इसलिए पहले अभिभावकों को शिक्षा का सम्मान करना होगा। हमारा यह काम केवल छात्र संख्या बढ़ाने तक सीमित नहीं है। यह एक बड़ा आंदोलन है, हमारी शालाओं में शिक्षा का स्तर स्थायी रूप से बढ़ाने का।"

मोना जी और संजय जी, आपके इस विशाल अभियान में टीम विनोबा भी आपके साथ है।

कहानी दीर्घ अवकाश के गणित की

टिकेश्वर जी का नाम आता है उन समर्पित शिक्षकों की सूची में, जिन्हें ढूँढने के लिए विनोबा टीम लगातार प्रयासरत है। टिकेश्वर जी छत्तीसगढ़ के धमतरी जिले में मगरलोद तहसील के अंतर्गत शासकीय माध्यमिक शाला भोथा में शिक्षक हैं।

भोथा (धमतरी): कहानी सुनने में छोटी सी है। सीधी सी है। किसी शॉर्ट फिल्म की तरह। पर कहानी के नायक, श्री टिकेश्वर यादव, असली हैं। वे जिन चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में 17 साल से काम कर रहे हैं, वह भी असली हैं। यह कहानी उनके पूरे कार्यकाल का बस एक छोटा सा हिस्सा है।

आठ वर्षों तक हाइयर सेकन्डेरी स्कूल में पढ़ाने के बाद टिकेश्वर जी पदोन्नत होकर भोथा के माध्यमिक शाला में गणित शिक्षक के रूप में आए, तब उनका स्कूल जिस संकुल (क्लस्टर) में था, वह पूरा संकुल ही शिक्षकों की कमी से जूझ रहा था। पास के बोरसी स्कूल में तो गणित विषय के शिक्षक नहीं होने की वजह से पूरा संकाय (फैकल्टी) बंद करने की नौबत आ गई थी।

इसलिए संकुल प्राचार्य (क्लस्टर हेड) श्री सुरेन्द्र कुमार ध्रुव ने टिकेश्वर जी से सहायता मांगी। कहा, "हमारे विद्यालय में 12वीं कक्षा में गणित विषय का अध्यापन नहीं हो पा रहा है। कृपया आप थोड़ी देर उन्हें पढ़ाएं।" टिकेश्वर जी दुविधा में पड़ गए, क्योंकि एक तरफ उनके अपने स्कूल में वे पूरी तरह व्यस्त रहते थे। दूसरी तरफ, जिन छात्रों को शिक्षा की प्यास थी उन्हें वे मदद भी करना चाहते थे।

टिकेश्वर जी ने जो तरकीब निकाली, वह कोई समर्पित और कठोर व्रती ही सोच सकता था। वे रोज़ मध्याह्न भोजन अवकाश में - अपने आराम और भोजनकी परवाह किए बिना - दो किलोमीटर की दूरी तय कर उस बोरसी की शाला में जाते, वहाँ क्लास लेकर अपने विद्यालय लौट आते। फिर अपने स्कूल के बाकी कालखंड पूरे करते। ऐसा उन्होंने पूरा साल किया।

कष्टों के अंत में खुशियाँ आई। 12वीं के जिन छात्रों को उन्होंने मेहनत से पढ़ाया उनमें से एक भूपेश गजेन्द्र नाम के लड़के ने 94.87% अंक प्राप्त किए। टिकेश्वर जी को शाला परिवार की ओर से उत्कृष्ट शिक्षक का सम्मान दिया गया। "विद्यार्थी मेरे आने का इंतजार करते थे, और लगन से पढ़ाई भी करते थे। उनकी खुशी और जागरूकता देखकर मुझे प्रेरणा मिलती रही। मेरे सहयोगी शिक्षकों का भी इस प्रयास में बड़ा साथ रहा," वे कहते हैं।

विनोबा टीम अपने अगले पड़ाव की ओर बढ़ने से पहले श्री टिकेश्वर यादव से दृढ़निश्चय और समर्पण का बहुमूल्य सबक लेकर जा रही है।

शिखर की तैयारी

शिखर कार्यक्रम के तहत, 8वीं कक्षा के सबसे होनहार छात्रों का चयन किया जाता है, जिन्हें अगले दो वर्षों में बोर्ड परीक्षा के लिए अतिरिक्त कोचिंग दी जाती है। इसका उद्देश्य है कि 10वीं बोर्ड परीक्षा की गुणवत्ता सूची (मेरिट लिस्ट) में सरकारी शालाओं के छात्रों की संख्या बढ़े। इस साल, कक्षा 9वी के 15 और कक्षा 10वी के 19, ऐसे कुल 34 छात्र चुने गए हैं।

नवागढ़ (जांजगिर-चांपा): कलेक्टर, श्री आकाश छिकारा, ध्यान से सुन रहे थे। जिला स्तरीय समीक्षा बैठक में नवागढ़ जिले के छात्र-छात्राएं उन्हें शिखर कार्यक्रम से संबंधित जानकारी दे रहे थे। इस चर्चा में छात्र-छात्राएं अपनी अभिव्यक्ति पूर्ण आत्मविश्वास के साथ कर रहे थे।

शिखर कार्यक्रम के जिला समन्वयक और शिक्षक, श्री राजकुमार जलतारे, जो नवागढ़ शासकीय कन्या पूर्व माध्यमिक शाला में गणित के शिक्षक हैं, चाहते थे कि कक्षा 9 और 10 के छात्रों पर विशेष ध्यान दिया जाए ताकि सरकारी शालाओं के छात्र भी गुणवत्ता सूची में दिखाई दें। "गुणवत्ता सूची में स्थान पाने से बच्चों का आत्म-सम्मान बढ़ेगा। इससे वे कभी भी खुद को निजी स्कूल के छात्रों से कम नहीं समझेंगे, और उनमें एक स्वस्थ मानसिकता का विकास होगा," राजकुमार जी कहते हैं। वे बताते हैं कि जशपुर जिले में 'संकल्प' नाम से एक कार्यक्रम चलता है, जिसके परिणाम स्वरूप वहाँ से हर साल 10-12 छात्र मेरिट लिस्ट में होते हैं।

इस योजना से प्रभावित होकर उन्होंने नवागढ़ तहसील के स्तर पर ही कुछ करने की योजना बनाई। बहुत प्रयासों के बाद, विकासखंड शिक्षा अधिकारीयों में से केवल (BEO) श्री विजय लहरे को वे राज़ी कर पाए। "आखिर प्रशासन की ओर से कोई तो समर्थन मिला। फिर लहरे जी के मार्गदर्शन में पिछले वर्ष शिखर कार्यक्रम शुरु किया। कक्षा 8 के होनहार छात्रों का चयन किया गया, जिन्हें अगले दो वर्षों में बोर्ड परीक्षा के लिए विशेष प्रशिक्षण दिया

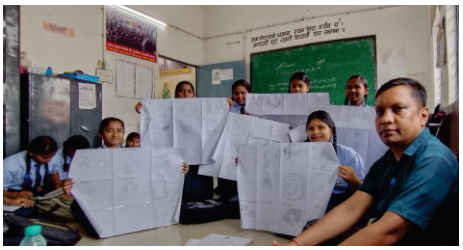

जाना था," राजकुमार जी कहते हैं।

अब अगली समस्या यह थी कि इस कार्यक्रम के लिए सरकार की ओर से कोई बजट, कोई अलग भवन या अतिरिक्त सुविधा नहीं थी। राजकुमार जी ने थोड़ी जद्दोजहद कर के इसका भी सामयिक समाधान निकाला। उन्होंने प्रधान अध्यापक को सहमत कर सभी छात्रों की नवागढ़ शासकीय कन्या विद्यालय में, रोज़ सुबह 7:30 से 11:30 तक बैठने की व्यवस्था करवाई।

फिलहाल, पढ़ाई के लिए जो भी खर्च पड़ता है, राजकुमार जी अपनी जेब से दे रहे हैं। लेकिन वे खुश हैं कि आखिर बच्चों की कोचिंग शुरू तो हुई। 'शिखर' के छात्रों से विनोबा टीम ने बात की तब पता चला कि उनका कक्षा 10 का सिलेबस सितंबर माह में पूरा हो चुका है, और अंतिम परीक्षा तक वे अब उसका केवल रिवीजन करनेवाले हैं।

हाल ही के जिला स्तरीय समीक्षा बैठक में छात्रों को कलेक्टर साहब ध्यान से सुन रहे थे, जब छात्रों ने बड़े आत्मविश्वास के साथ उन्हें विस्तार से बताया कि 'शिखर' के छात्र, जलतारे सर और अन्य शिक्षकों द्वारा सिखाई गई स्व-अध्ययन तकनीकों के माध्यम से कक्षा 10 के विषयों की तैयारी कैसे करते हैं।

उन्होंने समझाया कि इस प्रशिक्षण में शिक्षक केवल मार्गदर्शन करते हैं, बाकी पढ़ाई स्वाध्याय से होती है। श्री राजकुमार जलतारे, जो संकुल शैक्षिक समन्वयक (C A C) भी हैं, और सरकार के 'नवाजतन' पेडागॉजी का भी हिस्सा हैं, इसके अलावा उनकी शिक्षकों की छोटी सी टीम कक्षा 8वीं के विद्यार्थियों को राष्ट्रीय साधन सह प्रावीण्य छात्रवृत्ति परीक्षा (NMMSE) के लिए तैयार करती है। "पिछले साल नवागढ़ ब्लॉक से 20 बच्चे इस परीक्षा में सफल हुए। इस साल के लिए हमारा लक्ष्य 100 छात्रों का है," राजकुमार जी गर्व से बताते हैं।

जब एक शिक्षक, अपनी तमाम व्यस्तताओं के बावजूद, अपने छात्रों के लिए एक नया कार्यक्रम शुरू करने के बारे में सोचता है और उसे सफलतापूर्वक चलाता भी है, तब विनोबा टीम को उसमें नज़र आता है छात्रों को बेहतरीन शिक्षा दिलाने की तड़प एवं सतत कार्य करनेवाला एक कर्मठ शिक्षक। उनके सकारात्मक एवं निरंतर किये जा रहे प्रयासों को विनोबा टीम का नमन।

शिक्षा की लय

योगेश माकोने सर स्कूल के कार्यक्रमों में बच्चों को मृदंग पर साथ करते हैं। उनका मृदंग वादन जैसे प्रतीक है उनके अव्याहत कार्य का, जो विद्यार्थियों को बड़ी खूबी से शिक्षा की लय से जोड़कर रखता है। "यह लय अब नहीं टूटेगी," वे कहते हैं, "शिक्षा के इस मृदंग के मधुर और गंभीर बोल इन छात्रों के पूर्ण विकसित व्यक्तित्वों के रूप में दूर दूर तक गूँजेंगे।"

दुगलगांव (नासिक): विनायकखिंड। नासिक के त्र्यंबक तहसील में दुर्गम ऊँचाई पर बसा एक गाँव। जनसंख्या करीब 250। स्कूल के नाम पर एक छोटा सा कमरा, एक शिक्षक और 10 छात्र। साल था 2009।

लेकिन एक दिन अचानक गाँववाले सीमेंट, रेत, ईंटें, सिर पर, कंधों पर, ढो कर गाँव में ले जाते दिखाई दिए। और उनका नेतृत्व कर रहे थे नव-नियुक्त नौजवान प्रधान अध्यापक योगेश माकोने। और यह सामान ले जाया जा रहा था स्कूल की इमारत निर्माण के लिए।

योगेश जी को त्र्यंबक से रोज़ पाँच किलोमीटर चलकर स्कूल आना पड़ता था, क्योंकि वहाँ कोई भी वाहन चलाने जैसा रास्ता नहीं था। योगेश जी को इस असुविधा से कोई तकरार नहीं थी। पर वे इस बात से अस्वस्थ हुए कि स्कूल ठीक न हो तो बच्चों में शिक्षा के प्रति प्रेम विकसित नहीं होगा।

सरकार के मर्यादित बजट में इस गाँव में सामान पहुँचाकर स्कूल बनाना संभव नहीं था। इसलिए स्कूल का काम रुका हुआ था। योगेश जी ने गाँववालों को समझाया कि अगर स्कूल ठीक हुआ तो बच्चे पढ़ेंगे, गाँव की हालत बदलेगी, रास्ते होंगे, सुविधाएँ होंगी।

गाँववाले समझ गए। सब मिलकर पैदल ही सीमेंट, रेत, ईंटें, सिर पर, कंधों पर ढो कर गाँव ले आए और खुद ही अपने हाथों से इमारत बनाई। इस काम में स्वयं योगेश जी और उनके सहकारी शिक्षक भी सक्रिय थे। वहाँ के मौसम में यह सब आसान नहीं था। इमारत बनने में 3 से 4 साल लग गए। लेकिन गाँववाले काम करते रहे। आखिर स्कूल बना। पढ़ाई होने लगी। सरकार की योजनाओं का लाभ भी मिलने लगा। अगले 9 सालों में विद्यार्थियों की संख्या 10 से 25 हो गई। सबकी मेहनत रंग लाई।

योगेश माकोने संतुष्ट थे जब 2018 में उनका तबादला येवला तहसील के दुगलगांव की स्कूल में हुआ। वहाँ पर वे नवाचारी पद्धतियों से पढ़ाई तो मजेदार बना ही रहे हैं, छात्रों को अनेक जिला स्तरीय उपक्रमों और स्पर्धाओं के लिए बड़ी मेहनत से तैयार कर के स्कूल के लिए पुरस्कार भी ला रहे हैं।

योगेश जी के रूप में विनोबा टीम को सरकारी शालाओं में शिक्षा की गुणवत्ता का एक और प्रमाण मिला है। उन जैसे शिक्षकों की वजह से स्कूल की बढ़ती गुणवत्ता ने अनेकों को आकर्षित किया है। अब दुगलगांव के सारे शिक्षकों के बच्चे, और शिक्षा विभाग के कर्मचारियों के बच्चे भी जिला परिषद की स्कूल में जाते हैं।

चित्र बदल रहा है। विनोबा टीम देश के सरकारी स्कूलों की जो छवि बनाना चाहती है, उस दिशा में एक और कदम आगे बढ़ा है।

वन नेशन-वन स्टूडेंट आईडी • सभी निजी और सरकारी स्कूलों के छात्रों के लिए जरूरी होगी, आईडी में अभिभावकों का आधार भी लगेगा

प्रदेश के 57 लाख छात्रों को मिलेगी यूनिक पहचान, अगले महीने 12वीं से इसकी शुरुआत होगी

भास्कर एक्सक्लूसिव

प्रशांत गुप्ता | रायपुर

केंद्र की महत्वाकांक्षी योजना 'वन नेशन, वन स्टूडेंट आईडी' स्कूल स्तर पर अक्टूबर से शुरू होने जा रही है। इसके तहत छत्तीसगढ़ के सरकारी और निजी स्कूलों के 57 लाख छात्रों का अपना 12 अंक की यूनिक अपार आईडी बनेगी। यह आईडी वैसी ही पहचान होगी, जैसे-देश के लोगों का आधार कार्ड। राज्य में सबसे पहले 12वीं के छात्रों की आईडी बनेगी, क्योंकि वे अगले वर्ष में पास-आउट हो जाएंगे।

इस आईडी में छात्र का पूरा शैक्षणिक डेटा होगा, जो एक क्लिक पर कम्प्यूटर स्क्रीन पर खुल जाएगा। अपार आईडी, आधार कार्ड से लिंक होगी। छात्र के साथ पैरेंट्स या परिजन का भी आधार लगाया जाएगा। केंद्रीय स्कूल शिक्षा मंत्रालय स्तर पर इसे लेकर तैयारियां जोरों पर हैं। केंद्र सभी राज्यों में एक साथ इसे स्कूल स्तर पर लॉन्च करेगा। इसे लेकर 19, 20 और 21 सितंबर को देशभर के स्कूल शिक्षा विभाग/समग्र शिक्षा के नोडल अधिकारियों की दिल्ली में ट्रेनिंग दे दी गई। साथ ही जिला कलेक्टरों को इस प्रोजेक्ट का नोडल अधिकारी बनाया गया है। अभिभावकों को जानकारी देने के लिए पेरेंट्स-टीचर मीटिंग अनिवार्य की गई है। इसी दौरान अभिभावकों से सहमति पत्र भरवाए जाएंगे। इसका प्रारूप केंद्र से राज्य को भेजा जा चुका है। शिक्षा विभाग 2 साल में सभी छात्रों का आईडी जनरेट करेगा। वैसे तो बीते साल अक्टूबर में ही केंद्र ने इसे लॉन्च किया था।

फायदेः हिस्ट्री देख सकेंगे, डुप्लीकेसी बंद

- देश में छात्र कहीं भी दाखिला लेगा, वह स्कूल अपार नंबर से पुरानी हिस्ट्री ऑनलाइन देख पाएगा।
- इससे स्टूडेंट डुप्लीकेसी थम जाएगी। शाला त्यागी छात्र ट्रैक हो सकेंगे।
- छात्रों को शिक्षा, लाइब्रेरी, ट्रेवलिंग में सब्सिडी मिल सकेगी।
- स्कूलों के बीच छात्रों के ट्रांसफर भी आसान होंगे।

अपार क्या है- APPAR (Automated Permanent Academic Account Registry यानी स्वचालित स्थाई शैक्षणिक खाता रजिस्ट्री)। स्कूल में दाखिला लेने के साथ ये आईडी बनेगी। सीधे आधार लिंक होगी। पूरी तरह से डिजिटल होगी। इसमें छात्र का पहली कक्षा से लेकर स्नातक या इससे आगे की पढ़ाई का पूरा डेटा क्लास बढ़ने के साथ अपडेट होता रहेगा। देश में छात्र की एक ही आईडी होगी।

अपार आईडी से पहले जिनका आधार नहीं, उसे भी बनाया जाएगा

छत्तीसगढ़ एक आदिवासी बहुल्य राज्य है। 11 जिले आज भी नक्सल प्रभावित हैं। पहुंचविहीन क्षेत्रों में स्कूल संचालित हो रहे हैं। आज की स्थिति में लाखों छात्र ऐसे हैं जिनके आधार कार्ड नहीं बने हैं। ऐसे में सरकार पहले इन छात्रों का आधार कार्ड बनाएगी, फिर स्टूडेंट आईडी बनेगी। तभी जाकर दोनों लिंकअप होंगे। आधार कार्ड के लिए पंचायत स्तर पर स्पेशल कैंप लगाए जाएंगे। यह प्रक्रिया को पूरी करने की जिम्मेदारी कलेक्टर की होगी।

कलेक्टर होंगे नोडल अधिकारी

वन नेशन, वन स्टूडेंट आईडी प्रोजेक्ट को लेकर जिला स्तर पर कलेक्टर नोडल अधिकारी होंगे। बहुत जल्द जिला स्तर पर ट्रेनिंग शुरू की जाएगी।
संजीव झा, प्रबंध संचालक, समग्र शिक्षा छत्तीसगढ़

महाराष्ट्र बोर्ड के पाठ्यक्रम में अब एनसीईआरटी की पाठ्यपुस्तके

मुंबई: महाराष्ट्र सरकार अगले शैक्षणिक वर्ष से राज्य बोर्ड के स्कूलों में गणित और विज्ञान के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT) की पाठ्यपुस्तकों को अपनाने जा रही है।

'द टाइम्स ऑफ इंडिया' की वेबसाइट पर प्रकाशित समाचार के अनुसार, यह निर्णय अधिकारियों, प्राचार्यों और शिक्षक प्रतिनिधियों के साथ हाल ही के एक बैठक में लिया गया। इस बैठक में स्कूल शिक्षा मंत्री दीपक केसरकर ने सीबीएसई स्कूलों की बढ़ती मांग पर जोर दिया, जो छात्रों को प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी पर ध्यान केंद्रित करने के कारण हो रही है। ये पाठ्यपुस्तकें चरणबद्ध तरीके से लागू की जाएंगी। 2025-26 में कक्षा 1, 3, 5, 8, और 11 से इसकी शुरुआत होगी।

गैर-अंग्रेज़ी माध्यम स्कूलों को सेमी-इंग्लिश शिक्षा प्रणाली

महाराष्ट्र सरकार के गणित और विज्ञान के लिए NCERT पाठ्यपुस्तकों को लागू करने के निर्णय से सभी गैर-अंग्रेज़ी माध्यम स्कूलों को सेमी-इंग्लिश शिक्षा प्रणाली अपनानी होगी, क्योंकि इन दोनों विषयों की पाठ्यपुस्तकें केवल अंग्रेज़ी में उपलब्ध होंगी। हालांकि, मराठी सभी स्कूलों और कक्षा 12 तक के विद्यार्थियों के लिए अनिवार्य भाषा बनी रहेगी।

इतिहास और भूगोल के लिए पाठ्यक्रम पहले जैसा ही रहेगा। मौजूदा बालभारती पाठ्यक्रम से इस बदलाव की योजना नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) के तहत अगले साल स्कूल शिक्षा में इसके कार्यान्वयन के साथ बनाई गई है।

सरकारी स्कूलों में बायोमेट्रिक!

बेंगलुरु: कर्नाटक के सरकारी और सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों में छात्रों को जल्द ही बायोमेट्रिक प्रणाली के माध्यम से अपनी उपस्थिति दर्ज करनी पड़ सकती है। 'द हिंदू' वेबसाइट पर प्रकाशित समाचार के अनुसार, स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग (DSEL) ने एक बायोमेट्रिक पायलट प्रोजेक्ट की सफलतापूर्वक पूर्णता के बाद एक प्रस्ताव प्रस्तुत किया है। यदि इसे मंजूरी मिलती है, तो यह प्रणाली अगले शैक्षणिक वर्ष से लागू हो सकती है। स्कूल विकास और निगरानी समिति (SDMC) ने यह मांग की है कि बायोमेट्रिक उपस्थिति प्रणाली सरकारी और सहायता प्राप्त स्कूलों के शिक्षकों के लिए भी अनिवार्य की जाए। 'द हिंदू' के अनुसार DSEL के सूत्रों ने बताया कि यह पहल शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के व्यापक प्रयासों का हिस्सा है, जिसमें प्रमुख पहलू छात्रों की उपस्थिति की निगरानी के लिए बायोमेट्रिक प्रणाली का उपयोग है।

जिल्ह्यातील 'टॉप फाइव्ह' उपक्रमशील कर्मचाऱ्यांना संधी : आज संवाद साधणार

५ शिक्षिकांसाठी 'विनोबा' धावले अन् राज्यपाल भेटीचे 'योग' जुळले!

लोकमत न्यूज नेटवर्क

जळगाव : बदलत्या काळानुसार अध्यापन पद्धतीत होणारे बदल प्रत्येक शिक्षकाला धरबसल्या कळावेत, या बदलांचा स्वीकार सर्व शिक्षकांना करता यावा, या उद्देशाने जिल्हा परिषदेने जिल्ह्यातील प्राथमिक शिक्षकांना तंत्रस्नेही करण्यासाठी प्रोत्साहन देणारा नवा प्लॅटफॉर्म निर्माण केला आहे. या प्लॅटफॉर्मचा उपयोग विद्यार्थ्यांची शैक्षणिक गुणवत्ता वाढ व शिक्षकांच्या अध्यापन पद्धतीत सुधारणा करण्यासाठी होत आहे. गेल्या दोन महिन्यांपासून 'विनोबा' मोबाइल ॲप विकसित करण्यात आले आहे. या ॲपच्या व्यासपीठावरून जिल्ह्यात सर्वाधिक प्रभावी ठरलेल्या उपक्रम राबविणाऱ्या 'टॉप फाइव्ह' शिक्षिकांना मंगळवारी राज्यपालांना भेटण्याची संधी जिल्हा प्रशासनाने उपलब्ध करून दिली आहे. "विनोबा" ॲपच्या माध्यमातून प्राथमिक शिक्षकांना आता एका क्लिकवर अध्यापनविषयक ऑनलाइन संवाद साधता येत आहे.

ज्योती महाजन, पौर्णिमा पाटील, पूनम पवार, गायत्री देसले, प्रतिभा पाटील

दृष्टिक्षेपात उपक्रम

जि.प.शाळा १८२०

उपक्रमशील शिक्षक ६५८४

या शिक्षिकांची दखल

- जि.प.शिक्षिका ज्योती महाजन (रत्नापिंप्री ता. पारोळा), पौर्णिमा पाटील (शिरसोदे ता. पारोळा), पूनम पवार (खौशी ता. अमळनेर), गायत्री देसले (शेळावे ता. पारोळा) व प्रतिभा पाटील (गडखांब ता. पारोळा) या शिक्षिकांनी राबविलेल्या उपक्रमांना या ॲपवर सर्वाधिक पसंती मिळाली आहे. त्यांच्या या नावीन्यपूर्ण उपक्रमांची दखल जिल्हाधिकारी आयुष प्रसाद यांनी घेतली आणि शिक्षणाधिकाऱ्यांकरवी या शिक्षिकांना राज्यपालांच्या भेटीसाठी मंगळवारी दुपारी १२ वाजता जिल्हाधिकारी उपस्थित राहण्याच्या सूचना केल्या.

कूट प्रश्न

A + A = 2

A + B = 3

A + B + C = 6

A + B + C *4

कक्षा 6 की NCERT पुस्तक में नया पाठ

'राष्ट्रीय युद्ध स्मारक' पर कविता, 'वीर अब्दुल हमीद' पर पाठ

नई दिल्ली: शिक्षा मंत्रालय (MoE) ने 20 सितंबर को घोषणा की कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 के अनुरूप, कक्षा 6 की NCERT पाठ्यक्रम में 'राष्ट्रीय युद्ध स्मारक' शीर्षक वाली एक कविता और 'वीर अब्दुल हमीद' पर एक पाठ शामिल किया गया है। 'इंडियन एक्सप्रेस' की वेबसाइट पर प्रकाशित समाचार के अनुसार, यह पहल रक्षा मंत्रालय और शिक्षा मंत्रालय के संयुक्त प्रयास से की गई है, जिसका उद्देश्य "स्कूल के बच्चों में देशभक्ति, कर्तव्य की निष्ठा, साहस और बलिदान के मूल्यों का विकास करना और युवाओं की राष्ट्र निर्माण में भागीदारी को बढ़ावा देना" है।

MoE ने बताया कि 'वीर अब्दुल हमीद' का पाठ अब्दुल हमीद के साहस को सम्मानित करता है, जिन्होंने 1965 के भारत-पाक युद्ध के दौरान देश के लिए सर्वोच्च बलिदान दिया।

महावाचन उत्सव का समापन

पुणे: सितंबर के अंत में 'महावाचन उत्सव' का समापन होगा। शैक्षिक वर्ष 2024-25 में राज्य के सभी प्रबंधन स्कूलों में 22 जुलाई से 30 अगस्त तक इस उत्सव 2024' का आयोजन किया गया। 'महावाचन उत्सव 2024' का मुख्य उद्देश्य पढ़ने की संस्कृति को मजबूत करना, छात्रों में पढ़ने की रुचि विकसित करना, उन्हें मराठी भाषा, साहित्य और संस्कृति से जोड़ना तथा उनकी रचनात्मकता और भाषा संचार कौशल को बढ़ावा देना है।

OLF का हाई-टेक विनोबा कार्यक्रम सरकारी स्कूलों में शिक्षा का स्तर बढ़ाने के लिए, जिला प्रशासन के साथ मिलकर शिक्षकों की सहायता करता है, उन्हें पुरस्कृत और प्रोत्साहित करता है। साथ ही अभिनव उपक्रमों को लागू करने की क्षमता बढ़ाने पर काम करता है।

ओपन लिंक्स फाउंडेशन
बंगलो नं. 3, तात्या टोपे सोसायटी, शिवरकर गार्डन के सामने, पुणे-411040
संस्थापक: **संजय डालमिया** ■ सह संस्थापक: **रीना डालमिया**
संपादक: **अमोल मावकर**